Daily Current Affairs

चीन का सैन्य युद्धाभ्यास और ताइवान की बढ़ती चिंता

चर्चा में क्यों ?

- चीन, जो लोकतांत्रिक रूप से शासित ताइवान को अपना क्षेत्र मानता है, ने लाई चिंग-ते के ताइवान का राष्ट्रपति बनने के तीन दिन बाद "संयुक्त तलवार - 2024A" अभ्यास शुरू किया था, ने इसकी समाप्ति की घोषणा कर दी है।
- ताइवान के रक्षा मंत्रालय के अनुसार चीन ने इस अभ्यास में बमवर्षकों के साथ हमलों का अनुकरण किया और जहाजों पर चढ़ने का अभ्यास किया,
- साथ ही 46 चीनी सैन्य विमानों ने ताइवान जलडमरूमध्य की मध्य रेखा को पार किया, जो पहले दोनों पक्षों के बीच एक अनौपचारिक अवरोध के रूप में कार्य करती थी।
- चीन ने पिछले चार वर्षों में नियमित रूप से ताइवान के आसपास सैन्य गतिविधियाँ आयोजित की हैं, जिनमें 2022 और 2023 में बड़े पैमाने पर युद्ध अभ्यास भी शामिल हैं।
- पीपुल्स लिबरेशन आर्मी डेली की टिप्पणी, जिसे "सेना की आवाज" के रूप में प्रकाशित किया गया था,इसके अनुसार लाई चिंग-ते (ताइवान के नए राष्ट्रपति) चीन के विकास को रोकने हेतु कार्य करने के लिए दृढ़ संकल्प हैं।
- इसमें कहा गया कि, "यदि ताइवान की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाली अलगाववादी ताकतें अपनी राह पर चलने पर जोर देती हैं या

ResultMitra

जोखिम उठाती हैं, तो पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सशस्त्र शाखा और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की प्रमुख सैन्य शक्ति) आदेशों का पालन करेगी और सभी अलगाववादी साजिशों को ध्वस्त करने के लिए निर्णायक कार्रवाई करेगी।"

चीन और ताइवान संघर्ष का इतिहास

- दरअसल ताइवान, किंग राजवंश के दौरान चीनी नियंत्रण में आ गया था, लेकिन 1895 में प्रथम चीन-जापान युद्ध में चीन की हार के बाद इसे जापान को दे दिया गया।
- हालांकि 1945 में द्वितीय विश्व युद्ध में जापान की हार के बाद चीन ने ताइवान पर पुनः नियंत्रण प्राप्त कर लिया , लेकिन राष्ट्रवादियों और साम्यवादियों के बीच गृह युद्ध हुआ।
- मुख्य भूमि चीन में माओत्से तुंग के नेतृत्व में कम्युनिस्टों द्वारा गृह युद्ध जीतने के बाद, राष्ट्रवादी कुओमिन्तांग पार्टी के नेता चियांग काई-शेक 1949 में ताइवान भाग गए।
- चियांग काई-शेक ने द्वीप पर चीन गणराज्य की सरकार स्थापित की और 1975 तक राष्ट्रपति बने रहे।
- चीन ने कभी भी ताइवान के अस्तित्व को एक स्वतंत्र राजनीतिक इकाई के रूप में मान्यता नहीं दी है, यह तर्क देते हुए कि यह हमेशा उसकी 'वन चाइना पॉलिसी ' के तहत एक चीनी प्रांत था।
- पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना इस द्वीप को एक विद्रोही प्रांत मानता है जो यदि संभव हो तो शांतिपूर्ण तरीकों से पुनर्मिलन की प्रतीक्षा कर रहा है।
-

Result Mitra

एक देश, दो प्रणाली" दृष्टिकोण

- "एक देश, दो प्रणाली" का सिद्धांत पहली बार डेंग जियाओपिंग द्वारा ऐतिहासिक रूप से चीनी क्षेत्रों (ताइवान, हांगकांग और मकाऊ) के साथ साम्यवादी मुख्य भूमि के बीच संबंधों को बहाल करने के तरीके के रूप में प्रस्तावित किया गया था - जिनकी अर्थव्यवस्थाएं पूंजीवादी थीं।
- यह प्रणाली पहले ताइवान को प्रस्तावित की गई थी।
- ताइवान ने मांग की थी कि यदि वे एक देश, दो प्रणाली दृष्टिकोण को स्वीकार करते हैं तो:
    - पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी) का नाम बदलकर रिपब्लिक ऑफ चाइना रखा जाना चाहिए और,
    - मुख्य भूमि चीन में लोकतांत्रिक चुनाव कराए जाने थे।
- लेकिन मुख्य भूमि चीन ने इसे स्वीकार नहीं किया।
- उन्होंने सुझाव दिया था कि केवल एक ही चीन होगा, लेकिन हांगकांग और मकाऊ जैसे अलग-अलग चीनी क्षेत्र अपनी स्वयं की आर्थिक और प्रशासनिक प्रणालियों को बनाए रख सकते हैं, जबकि शेष चीन चीनी विशेषताओं वाले समाजवाद प्रणाली का उपयोग करेगा।
- 1984 में इस अवधारणा को चीन-ब्रिटिश संयुक्त घोषणा में शामिल किया गया, जिसमें दोनों देश इस बात पर सहमत हुए कि ब्रिटेन हांगकांग की संप्रभुता चीन को सौंप देगा।
- चीन रक्षा और विदेशी मामलों के लिए जिम्मेदार है लेकिन हांगकांग अपनी आंतरिक सुरक्षा स्वयं चलाता है।

Result Mitra

ताइवान का सामरिक महत्व

• चूंकि ताइवान पश्चिमी प्रशांत महासागर में चीन, जापान और फिलीपींस के निकट रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थान पर स्थित है।

• इसका स्थान दक्षिण-पूर्व एशिया और दक्षिण चीन सागर के लिए एक प्राकृतिक प्रवेश द्वार प्रदान करता है, जो वैश्विक व्यापार और सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं।

- साथ ही मुख्य भूमि चीन के साथ ताइवान की निकटता इसे चीन और अन्य क्षेत्रीय शक्तियों के लिए सैन्य योजना में एक महत्वपूर्ण कारक बनाती है।
- ताइवान पर नियंत्रण से पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र में चीन की शक्ति प्रदर्शन की क्षमता बढ़ेगी तथा जापान और दक्षिण कोरिया जैसे प्रमुख अमेरिकी सहयोगियों के लिए खतरा पैदा हो सकता है।
- वहीं ताइवान वैश्विक बाजार में सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग में एक प्रमुख भूमिका निभाता है।
- यह विश्व में सर्वाधिक (लगभग 65 प्रतिशत) उन्नत सेमीकंडक्टर का उत्पादन करता है।
- इसकी अर्थव्यवस्था क्षेत्रीय और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है, जो इसे क्षेत्रीय स्थिरता और आर्थिक सुरक्षा के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण बनाती है।

Result Mitra

चीन पर ताइवान का प्रभाव

- ताइवान ने चीन के आर्थिक और तकनीकी विकास में बहुत बड़ा योगदान दिया है। इससे चीन को दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने में मदद मिली है।
- लेकिन चीन और ताइवान के बीच इस संबंध को केवल सहभोजिता की श्रेणी में रखा जा सकता है, जिसमें ताइवान को केवल कुछ ही लाभ प्राप्त होते हैं।
- इस बात को समझते हुए ताइवानी स्वतंत्र होने का प्रयास कर रहे हैं तथा भारत और न्यूजीलैंड जैसे अन्य देशों में निवेश कर रहे हैं, ताकि वे चीन पर पूरी तरह से निर्भर होने से बच सकें।

भारत का रुख

- भारत ने वर्ष 1949 से "एक चीन" नीति को स्वीकार किया है जिसके तहत ताइवान और तिब्बत को चीन का हिस्सा माना जाता है।
- हालाँकि, इस नीति को स्वीकार करने के पीछे भारत के कूटनीतिक निहितार्थ हैं, अर्थात, यदि भारत "एक चीन" नीति में विश्वास करता है, तो चीन को भी "एक भारत" नीति में विश्वास करना चाहिए।
- यद्यपि भारत ने 2010 के बाद से संयुक्त वक्तव्यों और आधिकारिक दस्तावेजों में एक चीन नीति के पालन का उल्लेख करना बंद कर दिया है, फिर भी चीन के साथ संबंधों की रूपरेखा के कारण ताइवान के साथ उसका जुड़ाव अभी भी सीमित है।
- भारत और ताइवान के बीच औपचारिक राजनयिक संबंध नहीं हैं, लेकिन 1995 से दोनों पक्षों ने एक-दूसरे की राजधानियों में प्रतिनिधि कार्यालय बनाए हुए हैं, जो वास्तविक दूतावासों के रूप में कार्य करते हैं।

Result Mitra

- ताइवान ने भारत (मुंबई) में, अपना तीसरा प्रतिनिधि ताइपे आर्थिक एवं सांस्कृतिक केंद्र (टीईसीसी) खोलने की योजना की घोषणा की थी।
- इसका उद्देश्य, ताइवान और भारत के बीच आर्थिक संबंधों को बढ़ाना तथा द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत करना है।

भारत और विश्व के लिए इस् संघर्ष के निहितार्थ

- भारत के लिए ताइवान के साथ उसके संबंधों का आर्थिक पहलू शायद ज़्यादा महत्वपूर्ण है।
- गत वर्ष भारत और ताइवान के बीच द्विपक्षीय व्यापार का अनुमान 7 बिलियन डॉलर से ज़्यादा था।
- ताइवान की कंपनियों ने भारत में 2.3 बिलियन डॉलर से ज़्यादा का निवेश भी किया है।
- दोनों देश एक मुक्त व्यापार समझौते पर भी बात कर रहे हैं और भारत में सेमीकंडक्टर विनिर्माण केंद्र बनाने के तरीकों पर काम कर रहे हैं। हालांकि युद्ध इन सभी पहलुओं को खत्म कर देगा।
- रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार ताइवान जलडमरूमध्य में किसी भी तरह की वृद्धि का पूरे इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में व्यापार और सुरक्षा पर असर पड़ेगा। साथ ही, चीन वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण मूल्य-वर्धक रहा है।
- अमेरिका के लिए रूस द्वारा आक्रामकता को प्रतिबंधित करने और चीन-ताइवान पर प्रतिरोधक रणनीति को फिर से लागू करना बहुत मुश्किल होगा।

Result Mitra

- यद्यपि ताइवान ने खुद को आवश्यक सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रॉनिक घटकों के सबसे बड़े निर्माताओं में से एक के रूप में स्थापित किया है।
- सेमीकंडक्टर चिप शिपमेंट की नाकाबंदी या मंदी चीन और ताइवान के बीच संघर्ष के कई प्रभावों में से एक हो सकती है, जिसका विनिर्माण और इंटरनेट संचार प्रौद्योगिकी सहित कई वैश्विक उद्योगों पर प्रभाव पड़ेगा।
- हाल ही में भारतीय कामगारों को ताइवान भेजने के लिए एक समझौते पर दोनों देशों द्वारा हस्ताक्षर किए गए।
- भारत के उद्योग, महत्वपूर्ण आपूर्ति श्रृंखलाएं और विदेशी आबादी सभी ताइवान जलडमरूमध्य में स्थायी शांतिपूर्ण यथास्थिति में तेजी से निवेश कर रहे हैं।

दाल आयात पहुंचा सात वर्षों के उच्चतम स्तर पर

संदर्भ और संबंधित आकड़ें

- अप्रैल 2024 में अनाज का उपभोक्ता मूल्य सूचकांक अप्रैल 2023 की तुलना में 8.63% अधिक था।
- लेकिन खाद्यान्नों में बढ़ी कीमतों से उत्पन्न मुद्रास्फीति ने गरीब और निम्न मध्यम वर्ग के अधिकांश भारतीयों को ज्यादा नुकसान नहीं पहुंचाया है, इसका श्रेय सरकार की प्रमुख खाद्य सुरक्षा योजना को जाता है, जिसके तहत 5 किलो चावल या गेहूं दिया जाता है।

Result Mitra

- यह योजना लगभग 813.5 मिलियन व्यक्तियों को हर महीने निःशुल्क प्रदान की जाएगी।
- हालांकि दालों के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता, जिनकी वार्षिक खुदरा मुद्रास्फीति 1.5 प्रतिशत रही तथा अप्रैल 2024 में 16.84% की दर से बढ़ी (अनाज की तुलना में लगभग दोगुना)।
- यद्यपि यह मुद्रास्फीति और भी अधिक नुकसानदायक होगी, क्योंकि खाद्यान्नों के विपरीत दाल शायद ही सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से बेची जाती है।
- इस कारण कम आय वाले परिवारों सहित अन्य उपभोक्ताओं को अपनी ज़रूरतों को काफी हद तक, यदि पूरी तरह से नहीं, तो खुले बाज़ार की खरीदारी के माध्यम से पूरा करना पड़ता है।
- उपभोक्ता मामलों के विभाग के अनुसार, सबसे सस्ती दाल चना की अखिल भारतीय औसत कीमत 23 मई को 85 रुपये प्रति किलोग्राम थी, जबकि एक साल पहले यह 70 रुपये थी।
- जबकि अरहर / तूर के लिए इसी तरह की कीमत में और भी ज़्यादा वृद्धि (120 रुपये से 160 रुपये प्रति किलोग्राम) हुई है, हालांकि उड़द और मूंग दोनों में तुलनात्मक रूप से कम वृद्धि (110 रुपये से 120 रुपये प्रति किलोग्राम) हुई है।
- वहीं मसूर या लाल मसूर की मॉडल खुदरा कीमत वास्तव में 95 रुपये से घटकर 90 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई है।

Result Mitra

भारत में दाल

- उपयुक्त तापमान: 20-27°C के बीच आवश्यक वर्षा: लगभग 25-60 सेमी.
- मिट्टी का प्रकार: रेतीली-दोमट मिट्टी।
- शाकाहारी भोजन में ये प्रोटीन की प्रमुख स्रोत हैं।
- फलीदार फसलें होने के कारण, अरहर को छोड़कर सभी दालें हवा से नाइट्रोजन को स्थिर करके मिट्टी की उर्वरता को बहाल करने में मदद करती हैं। इसलिए, इन्हें ज्यादातर अन्य फसलों के साथ चक्रानुक्रम में उगाया जाता है।
- दालें पूरे कृषि वर्ष में उगाई जाती हैं।
- रबी दालों के अंतर्गत चना, चना, मसूर, अरहर आती है जो कुल दाल में 60% से अधिक योगदान देती हैं।

- रबी फसलों को बुवाई के समय हल्की ठंडी जलवायु, वानस्पतिक विकास से लेकर फली विकास तक ठंडी जलवायु तथा परिपक्वता/कटाई के दौरान गर्म जलवायु की आवश्यकता होती है।
- खरीफ दालों के अंतर्गत मूंग (हरा चना), उड़द (काला चना), तुअर (अरहर दाल) आती है।
- खरीफ दलहन फसलों को बुवाई से लेकर कटाई तक गर्म जलवायु की आवश्यकता होती है।

दाल की कीमतें बढ़ने के प्रमुख कारण

- कीमतें बढ़ने का मुख्य कारण अल नीनो के कारण होने वाला अनियमित मानसून है।
- कृषि मंत्रालय के एक अनुमान के अनुसार, मौसमी वर्षा और शीत ऋतु में हुई बारिश के कारण घरेलू दलहन उत्पादन 2021-22 में 27.30 मिलियन टन (एमटी) और 2022-23 में 26.06 मिलियन टन से घटकर 2023-24 में 23.44 मिलियन टन रह जाएगा।
- सबसे ज्यादा महंगाई दर्ज करने वाली दो दालों में उत्पादन में ज्यादा गिरावट देखी गई है: चना (2021-22 में 13.54 मीट्रिक टन से 2022- 23 में 12.27 मीट्रिक टन और 2023-34 में 12.16 मीट्रिक टन) और अरहर / तुअर (4.22 मीट्रिक टन से 3.31 मीट्रिक टन)।
- व्यापार सूत्रों का अनुमान है कि इस साल चना उत्पादन 10 मीट्रिक टन से कम और अरहर / तुअर उत्पादन 3 मीट्रिक टन से कम होगा।
- यद्यपि कर्नाटक, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में, जहां किसानों ने अनियमित / कम बारिश के कारण कम क्षेत्र में बुआई की है।

Result Mitra

- हालांकि चना इस समय लातूर (महाराष्ट्र) में औसतन 6,500 रुपये प्रति क्विंटल और कलबुर्गी (कर्नाटक) में अरहर / तूर का 12,000 रुपये प्रति क्विंटल पर व्यापार हो रहा है,
- जो कि उनके संबंधित सरकारी घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) क्रमशः 5,440 रुपये और 7,000 रुपये प्रति क्विंटल से काफी ऊपर है।
- साथ ही परंपरागत रूप से, भारत में किसान दलहन के साथ फसल चक्र अपनाते थे।
- हालाँकि, हाल के दशकों में, चावल और गेहूं अधिकांश भारतीय आहार का मुख्य हिस्सा हैं, जिसके कारण उपभोग मांग में वृद्धि हुई है।
- फलस्वरूप चावल और गेहूँ जैसे पानी की अधिक खपत वाले अनाज की खेती की ओर रुझान हुआ है।
- साथ ही दलहन की फसलें अक्सर अनाज की तुलना में प्रति हेक्टेयर कम लाभ देती हैं।
- यह किसानों को उन्हें उगाने से हतोत्साहित करता है, खासकर उपजाऊ और सिंचित भूमि पर।
- उपर्युक्त कारणों से दालों का उत्पादन कम हुआ है और उनकी कीमतों में लगातार बढ़ोत्तरी हुयी है।

परिणामः आयात में वृद्धि

- चूंकि वर्ष 2023-24 (अप्रैल-मार्च) में भारत में दालों का आयात 3.75 बिलियन डॉलर का था, जो 2015-16 और 2016-17 के रिकॉर्ड 3.90 बिलियन डॉलर और 4.24 बिलियन डॉलर के बाद सबसे अधिक है।
- मात्रा के लिहाज से, प्रमुख दालों का आयात 2023-24 में कुल 4.54 मिलियन टन हुआ, जो पिछले दो वित्त वर्षों में 2.37 मिलियन टन और 2.52

Result Mitra

मिलियन टन से अधिक है, हालांकि यह 2015-16, 2016- 17 और 2017-18 में क्रमशः 5.58 मिलियन टन, 6.36 मिलियन टन और 5.41 मिलियन टन के सर्वकालिक उच्च स्तर से कम है।

- आयात में आयी यह बढ़ोत्तरी भारत द्वारा हासिल सापेक्ष आत्मनिर्भरता के उलट होने का संकेत देता है, जिसमें 2015-16 और 2021-22 के बीच घरेलू दालों का उत्पादन 16.32 मीट्रिक टन से बढ़कर 27.30 मीट्रिक टन हो गया।
- अपितु उत्पादन में हुई बढ़ोत्तरी किसानों को दाल उगाने के लिए प्रोत्साहित करने वाले सरकारी नीतिगत उपायों द्वारा सक्षम हुआ। इनमें एमएसपी-आधारित खरीद और शुल्क भी शामिल है, जिसके कारण 2022-23 तक आयात, विशेष रूप से पीले/सफेद मटर और चना का आयात लगभग बंद हो जाएगा।
- कम अवधि वाली चना और मूंग की खेती से घरेलू उत्पादन को और बढ़ावा मिला।

आयात प्रतिबंध व शुल्क

- खाद्य मुद्रास्फीति के नए दबावों ने तत्कालीन सरकार को अधिकांश दालों के आयात पर शुल्क और मात्रात्मक प्रतिबंध को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने के लिए बाध्य कर दिया है।
- 15 मई, 2021 को अरहर / तूर पर 0.2 मीट्रिक टन और उड़द एवं मूंग के आयात पर 0.3 मीट्रिक टन की वार्षिक मात्रात्मक प्रतिबंध तथा 10% मूल सीमा शुल्क हटा लिया गया।
- 26 जुलाई, 2021 को मसूर के आयात पर शुल्क 10% से घटाकर शून्य कर दिया गया।

Result Mitra

- इसके अलावा पीले/सफेद मटर के आयात पर 0.1 मीट्रिक टन का वार्षिक मात्रात्मक प्रतिबंध लागू था, इसके अलावा 50% शुल्क और 200 रुपये प्रति किलोग्राम का न्यूनतम मूल्य था। हालांकि ये सभी प्रतिबंध 8 दिसंबर, 2023 को हटा दिए गए।
- साथ ही इस वर्ष 3 मई को देशी (छोटे आकार के) चने पर लिया जाने वाला 60% आयात शुल्क भी हटा दिया गया।
- केवल मूंग दाल के मामले में, पूर्व के आयात प्रतिबंध को 11 फरवरी, 2022 को बहाल किया गया था।

दाल उत्पादन बढ़ाने के लिए भारत सरकार की पहलें

- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन:
    - कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के नेतृत्व में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन, जम्मू-कश्मीर और लद्दाख सहित 28 राज्यों और 2 केंद्र शासित प्रदेशों में संचालित होती है।
    - इसके अंतर्गत विभिन्न हस्तक्षेपों के लिए राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के माध्यम से किसानों को सहायता दी जाती है।
    - उच्च उपज वाली किस्मों (संकर किस्मों) का बीज उत्पादन एवं वितरण को प्रोत्साहन मिलता है।
    - इसके अतिरिक्त, दालों के लिए 150 बीज केन्द्रों की स्थापना से गुणवत्तापूर्ण दालों के बीजों की उपलब्धता बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान मिला है।
- प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान (पीएम-आशा) योजना:
    - वर्ष 2018 में शुरू की गयी इस व्यापक योजना में तीन प्रमुख घटक शामिल हैं:

Result Mitra

- मूल्य समर्थन योजना: पूर्व-पंजीकृत किसानों से न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खरीदा
- मूल्य न्यूनता भुगतान योजना: किसानों को मूल्य अंतर के लिए मुआवजा देती है।
- निजी खरीद स्टॉकिस्ट योजना: खरीद में निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करती है।

- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) अनुसंधान और विकास प्रयासों के माध्यम से दलहनी फसलों की उत्पादकता क्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है

आगे का रास्ता

- आने वाले महीनों में दाल की मुद्रास्फीति काफी हद तक दक्षिण-पश्चिम मानसून पर निर्भर करेगी।
- वैश्विक जलवायु मॉडल अगले महीने एल नीनो के "तटस्थ" चरण में परिवर्तित होने और यहां तक कि आने वाले चार महीने के मौसम (जून-सितंबर) तक उपमहाद्वीप में अच्छी वर्षा गतिविधि से जुड़े ला नीना की ओर इशारा कर रहे हैं।
- लेकिन अनिश्चित घरेलू आपूर्ति स्थिति (सरकारी एजेंसियों ने इस वर्ष की फसल से बमुश्किल कोई चना खरीदा है, जबकि 2023 में 2.13 मिलियन टन और 2022 में 2.11 मिलियन टन की खरीद होगी) और मानसून की अनिश्चितताओं के कारण अधिक आयात अपरिहार्य हो गया है।
- हालांकि सरकार ने पहले ही 31 मार्च, 2025 तक अरहर / तुअर, उड़द, मसूर और देसी चना के शुल्क मुक्त आयात की अनुमति दे दी है, साथ ही पीली सफेद मटर के आयात के लिए भी इसे 31 अक्टूबर, 2024 से आगे बढ़ाना पड़ सकता है।

Result Mitra